

# मौसी की बेटी की सुहागरात से पहले

“न्यू हिंदी सेक्स कहानी में पढ़ें कि मेरी मौसी की बेटी मेरी हमउम्र है, हम दोनों में हमेशा एक दूसरी से आगे निकलने की दौड़ रही है. शादी भी उसकी पहले तय हो गयी तो मैंने उससे उसमें भी जीत कैसे हासिल की ? ...”

Story By: priti Sharma (pritixyz24)

Posted: Tuesday, September 4th, 2018

Categories: [जीजा साली की चुदाई](#)

Online version: [मौसी की बेटी की सुहागरात से पहले](#)

# मौसी की बेटी की सुहागरात से पहले

दोस्तो, मैं आपकी प्यारी प्यारी दोस्त प्रीति शर्मा ।

आपने मेरी पिछली कहानी

प्रीति भाभी का कैजुअल सेक्स

पढ़ी और पसंद की, धन्यवाद.

अब मेरी न्यू हिंदी सेक्स कहानी का आनन्द लें !

बहुत दिनों बाद आज मेरी कज़िन पूजा हमारे घर आई, पूजा मेरी नीना मौसी की बेटी है। हम दोनों मौसरी बहनों में बेहद समानता है। बचपन से ही हम एक दूसरे की सबसे अच्छी सहेली भी रही हैं और प्रतिद्वंद्वी भी। हम दोनों बहनों में हमेशा से ही एक दूसरी से आगे निकलने की दौड़ रही है जबकि हम दोनों बहनें एक दूसरे की हमेशा बराबर की ही रही हैं। रंग रूप में, खूबसूरती में, कद काठी, में पढ़ाई में हर काम में बराबर की टक्कर रही है। यह बात अलग है कि हमने कभी अपना प्रतिद्वंद्व एक दूसरे पर ज़ाहिर नहीं किया, एक दूसरे से हमेशा हम बड़े प्यार से ही मिलती हैं। मगर हम दोनों को पता है कि हम दोनों एक दूसरे को पीछे छोड़ने के लिए किसी भी हद तक जा सकती हैं। इतना ज़रूर रहा है कि हमने कभी एक दूसरे को नीचा नहीं दिखाया, किसी की बुराई नहीं की, एक दूसरी की इज्जत नहीं उछाली, मगर हर संभव कोशिश की है कि मैं ये काम इस से पहले कर लूँ।

पूजा के साथ उसका पति वैभव, और बेटा निशांत भी आया। पूजा आगे थी, वो मुझे गले मिली, और मुझसे मिलने के बाद मेरे पति से भी गले मिलने चली गई। निशांत बस हल्का सा मेरे पाँव को हाथ लगा कर आगे चला गया।

जब मैं वैभव से मिली तो गले मिलते हुये उसने हल्के से मेरा चूतड़ भी दबा दिया- और साली साहिबा क्या हाल चाल हैं आपके ?

मैंने भी हंस कर जवाब दिया- हाल तो आपने देख ही लिया !

मेरा इशारा उसके चूतड़ दबाने वाली हरकत से था ।

वो हंस कर बोला- अरे आप तो हमेशा ही लल्लन टॉप लगती हो । उसने भी लल्लन में लन पर थोड़ा ज़ोर देकर कहा ।

हम सब अंदर हाल में आ गए और मैंने मेड को चाय लाने को कहा ।

हम सब बैठ कर बातें करने लगे, सब खुश थे । पूजा बहुत सुंदर लग रही थी, तो मैं भी कम गजब नहीं ढा रही थी । मैंने नोटिस किया के अगर वैभव की नज़र मेरे जिस्म पर रेंग रही थी, तो मेरे पति भी किसी न किसी बहाने पूजा को ताड़ ही लेते थे । चलो इतना तो बनता ही है, जीजा साली को ना ताड़े तो साली के सुंदर होने का क्या फायदा ।

उसके बाद खाना पीना और बाकी सब शुरू हो गया ।

अब आती हूँ मैं असली कहानी पर ।

जब मैं और पूजा दोनों कॉलेज में पढ़ती थी, तभी हम दोनों की शादी की बात चलनी शुरू हो गई थी । माँ ने भी और मौसी ने सब रिश्तेदारों से कह रखा था कि अगर कोई अच्छा लड़का मिले तो बताना । बेशक हम दोनों के कॉलेज में बॉयफ्रेंड थे और दोनों अपने अपने बॉयफ्रेंड से खूब चुद चुकी थी, मगर हमारा फैसला यह था कि शादी तो घर वालों की मर्जी से ही करेंगी क्योंकि घर हम दोनों की बड़ी सीधी सादी इमेज थी ।

तो जब शादी की बात शुरू हुई तो इसमें भी हम दोनों बहनों का कॉम्पटिशन शुरू हो गया । अब ज़िद यह कि पहले शादी किसकी होती है ।

पहले रिश्ता आया वैभव का, पूजा के लिए जो पूजा ने भी और उसके घर वालों ने भी सब ने मान लिया । उन्ही दिनों मेरे लिए भी रिश्ता आया समीर का । मुझे लड़का पसंद आ गया

और मैंने अपनी माँ को हाँ कह दी।

घर वाले भी राज़ी थे।

अब हम दोनों बहनों की अंदर अंदर ये ज़िद पकने लगी कि पहले शादी किस की होती है।

नीना मौसी ने माँ से बात की कि बचपन से दोनों बहनों के सब काम एक साथ ही हुये हैं, अगर शादी भी एक साथ हो जाए तो बढ़िया है, बाद दोनों घूम फिर भी एक साथ ही आएंगी।

आइडिया अच्छा था, मेरे घर वालों ने भी समीर के घर वालों से बात की, मगर समीर के दिल में अमेरिका जा कर ट्रेनिंग लेने की थी, इस वजह से हमारी शादी को 2 साल लेट होना था।

अब मेरी तो गांड जल गई, अगर पूजा की शादी पहले हो गई तो वो मेरे से बाज़ी मार के ले जाएगी। मगर समीर नहीं माना और मेरी शादी तो शादी हमारी तो सगाई भी टूट गई क्योंकि घर वालों ने और जगह रिश्ता ढूँढना शुरू कर दिया था।

मगर फिर कोई सही रिश्ता न मिला और मौसी ने पूजा की शादी की तारीख पक्की कर दी।

उसके बाद शुरू हुई शादी की शॉपिंग! पूजा हमेशा मुझे साथ ले जाती, वैभव भी साथ ही होता। मगर ये सब पूजा मेरी राय लेने के लिए नहीं बल्कि मुझे जलाने के लिए करती। मैं भी जाती ऊपर से खुश होती, पर अंदर ही अंदर जलती, और समीर की खूब माँ बहन एक करती।

एक दिन हम तीनों, मैं, पूजा और वैभव एक मूवी देखने गए। मूवी तो कुछ खास नहीं थी, मगर असली बात ये थी कि वैभव ने सिनेमा हाल में पूजा को खूब चूसा। दबा के उसके होंठ चूसे, उसकी टी शर्ट के अंदर हाथ डाल कर उसके मम्मे दबाये, पूजा ने भी अपना हाथ उसकी जांघों पर रखा था, शायद वो भी वैभव का लंड दबा रही थी, मगर मेरी वजह से

वैभव ने अपना लंड बाहर नहीं निकाला, वरना पूजा तो सिनेमा हाल में ही उसका लंड चूस जाती।

हालत मेरी भी खराब हो रही थी, एक तो मुझे भी सेक्स किए 2 महीने हो गए थे, और दूसरा, पूजा को देख कर मुझे और आग लग रही थी कि ये अपने होने वाले पति के साथ मजे कर रही है, और मैं अकेली बैठी कुढ़ रही हूँ।

उसके बाद तो जब भी हम कहीं जाते तो वैभव अक्सर पूजा को किस करता, पूजा भी बड़ा मजे से उसको किस करती, बेपनाह प्यार का दिखावा करती, सिर्फ मेरी गांड जलाने के लिए। कमर से ऊपर ऊपर जो कुछ किया जा सकता था, वो सब वो दोनों बड़ी बेशर्मी से मेरे सामने ही करते!

मगर धीरे धीरे साली साली कह कर वैभव ने मुझे भी कई बार अपनी बाहों में भर लिया, मेरे गालों पे किस किया, मेरे मम्मों को छुआ तो ज़रूर पर कभी पकड़ के दबाया नहीं, और कभी कभी आते जाते, मेरे चूतड़ पर हल्की सी चपत मार देनी। मैंने इन सब बातों का कभी बुरा नहीं माना, आखिर मैं उसकी साली थी, आधी घर वाली थी।

ऐसे ही एक दिन पूजा ने मुझसे कहा- यार सुन, तेरे से एक सलाह करनी है।

मैंने कहा- बोल ?

वो बोली- यार, वैभव बहुत पीछे पड़ा है, कहता है, शादी में तो अभी महीना पड़ा है, मुझसे अब सब्र नहीं होता, चल सब कुछ कर लेते हैं। मैं उसे रोक रही हूँ, पर वो मान ही नहीं रहा।

मैंने उसे कहा- अरे पागल है क्या साली। अगर शादी से पहले ही सेक्स कर लेगी तो सुहागरात का क्या मज़ा रह जाएगा ? तू उसे साफ मना कर दे।

वो बोली- अरे यार बहुत समझाया है मैंने, मगर वो तो पाँव पड़ने तक को तैयार है, सिर्फ एक बार सेक्स कर लो, ऐसा बोलता है।

मैंने कहा- तो अब क्या करेगी ?

वो बोली- वही तो सोच रही हूँ ।

मैंने कहा- उसकी बड़ी भाभी से बात करके देख, वो या वैभव का बड़ा भाई उसे समझाये ।

वो बोली- अरे यार, मैं ऐसी बात करते क्या अच्छी लगूँगी ?

अब समस्या गंभीर थी । इतने में वैभव का फोन आ गया, उसने बताया कि परसों को उसने एक होटल में रूम बुक कर लिया है । शॉपिंग और मूवी के बहाने चलेंगे और चुपचाप अपना काम करके घर वापिस आ जाएंगे ।

पूजा ने सारी बात मुझे बताई और रुआंसी होकर बोली- यार, मैंने तो कितने सपने सजाये थे सुहागरात के... ये तो सब मिट्टी में मिला देगा !

मैंने उसे सांत्वना दी और वापिस अपने घर आ गई ।

रात को जब मैं सोने से पहले वैसे ही बेड पर लेटी कुछ सोच रही थी, तभी मेरे मन में खयाल आया 'यार, ये मेरे साथ ज्यादाती है, पूजा की सगाई भी मुझसे पहले, शादी भी मुझसे पहले और अब सुहागरात भी मुझसे पहले ? नहीं ये नहीं हो सकता । कुछ न कुछ मुझे ऐसा करना पड़ेगा कि मैं पूजा को काट के आगे बढ़ जाऊँ ।'

बस यहीं मेरे दिमाग में एक शैतानी विचार आया, अगर मैं वैभव से साथ पूजा से पहले सेक्स कर लूँ, तो वैभव भी खुश, पूजा भी खुश और मैं भी खुश । वैभव को चोदने को लड़की मिल जाएगी, पूजा नहीं तो प्रीति ही सही । पूजा को सुहागरात का पूरा मज़ा मिलेगा और मुझे आत्म संतुष्टि के मैंने उसके पति के साथ उससे पहले सुहाग रात मना ली ।

अगली सुबह मैंने पूजा से बात की- यार देख, मैं सोचती हूँ कि अगर और कोई वैभव को नहीं समझा सकता तो क्यों न मैं समझा के देखूँ, हम अच्छे दोस्त हैं, क्या पता मेरी बात मान ही ले ।

पूजा ने कहा- यह ठीक रहेगा, तू ट्राई करके देख ! पर उसे मिलेगी कहाँ ?

मैंने कहा- तू बता, हम तीनों एक साथ बैठ कर बात कर लेते हैं।

वो बोली- अरे नहीं, मैं नहीं जाऊँगी, वो फिर ज़िद करेगा और अगर मेरा मन डोल गया तो मैं तो कहीं सुहाग दिन ही न मना डालूँ।

मैंने कहा- तो फिर मैं अकेली उससे कैसे मिल सकती हूँ।

वो बोली- देख, तू अपने घर कोई बहाना बना कर निकल और उसे उसी होटल में मिल, जो उसने मेरे लिए बुक किया है।

मैंने नकली डर दिखाया- अरे होटल में, पागल है क्या ?

वो बोली- अरे पागल, होटल में और कोई नहीं होगा, तो तू उसे डीटेल में सब समझा सकती है।

मैं नकली डर ज़ाहिर तो करती रही, मगर अंदर से मैंने सोच लिया, साली तेरे पति से तुझ से पहले अगर मैंने न चुदवाया तो मेरा नाम नहीं।

अगले दिन मैंने दिन में पूजा के साथ सारी प्लानिंग की कि मुझे वैभव से क्या बात करनी है, उसे क्या समझाना है।

सारा कुछ प्लान करने के बाद पूजा ने वैभव को फोन कर दिया कि वो शाम को उससे मिलने आ रही है। करीब 5 बजे मैं ब्यूटी पार्लर गई, वहाँ जाकर मैंने अपने जिस्म की वैक्सिंग कारवाई। गर्दन नीचे के सभी बाल साफ करवा दिये, एकदम चिकनी बन गई, चेहरे का भी मेकअप किया। और वहीं पार्लर में ही खूबसूरत सुर्ख लाल साड़ी में सजधज कर तैयार हो गई।

बेशक ये शादी वाली लाल साड़ी नहीं थी, मगर फिर मैं दुल्हन लग रही थी।

मैंने टैक्सी ली और होटल में जा पहुंची। रूम नंबर मुझे पता था, जब मैंने रूम की बेल बजाई तो वैभव ने दरवाजा खोला।

मुझे देख कर बड़ा अचंभित हुआ- अरे प्रीति तुम, मगर पूजा कहाँ है ?

मैंने कहा- क्यों पूजा ही आ सकती है, मैं नहीं आ सकती क्या ?

वो बोला- अरे यार, तुम क्या पूजा से कम हो, ऑल्लेवज़ वेलकम, जब चाहे आओ ।

वो मुझे अपनी आगोश में लेकर सोफ़े तक ले गया और पहले उसने मुझे एक बड़ा सारा फूलों का बुके दिया, फिर मुझे बड़े आदर से सोफ़े पर बैठाया ।

मेरे बैठने के बाद वो मेरे साथ ही बैठ गया ।

तो वो बोला- पूजा ने तुम्हें भेजा है अपनी जगह ।

मैंने थोड़ा एटीटिउड दिखाया- अपनी जगह नहीं, तुम्हें समझने भेजा है ।

वो हंसा और बोला- कुछ लोगी ?

मगर मेरी राय जाने बिना ही वो उठा और टेबल से दो गिलास में वाईट वाईन डाल कर ले आया ।

मैंने गिलास ले लिया और दोनों पीने लगे ।

वो बोला- क्या समझने आई हो मुझे ?

मैंने कहा- यही कि जो ज़िद तुमने पकड़ी है, वो छोड़ दो, शादी में दिन ही कितने रह गए हैं, शादी के बाद पूजा तुम्हारी ही तो है, फिर जो मर्जी करो, अभी इतनी क्या आग लगी पड़ी है ?

वो बेशर्मी से अपने सीने पर हाथ फेर कर बोला- यार सच पूछो तो आग तो सच में लगी पड़ी है, अब तो हालत ये है कि किसी न किसी को ये आग बुझानी ही पड़ेगी ।

मैंने दिल में सोचा- अबे साले तू क्या आग बुझाएगा, आग तो खुद तुझ से बुझने के लिए सजधज कर आई है ।

मैंने पूछा- तो मतलब तुम नहीं मानोगे ?

वो बोला- यार प्रीति, इसमें मानने या ना मानने का तो सवाल ही नहीं है । देखो हम सब



मेच्योर हैं, अगर मैं शादी से पहले सेक्स करना चाहता हूँ, तो इसमें बुराई क्या है ? तुम बताओ, तुम्हारा दिल शादी से पहले सेक्स करने को करे तो तुम क्या करोगी ? मैंने थोड़ा असमंजस में जवाब दिया- अगर इतना ज्यादा दिल कर रहा है तो करने में क्या बुराई है ।

वो बोला- वही तो... मगर वो साली मादरचोद पूजा समझती नहीं है । सच कहूँ प्रीति... तुम्हारी सोच बिल्कु मेरे जैसी है, मुझे वैसे भी पूजा से ज्यादा तुम पसंद हो ।

वो एकदम से मेरे पास आया और मेरा हाथ पकड़ कर बोला- अगर पूजा नहीं तो क्या तुम मुझसे सेक्स कर सकती हो ? यहाँ किसी को पता भी नई चलेगा ।

मैं तो हैरान रह गई क्योंकि मैं तो वैभव को बहुत ही शरीफ समझती थी मगर ये तो एक नंबर का लुच्चा निकला, साले ने सीधे सीधे ही मुझे चोदने की ऑफर दे डाली ।

मैं चुप रही तो वो बिल्कुल मेरे साथ सट कर बैठ गया और मेरे कंधे पर हाथ रख कर बोला- प्लीज यार, मैं पूरा मूड बना कर आया हूँ, ना मत करना, दोनों एंजाय करेंगे और चुपचाप अपने घर जा कर सो जाएंगे । बोलो क्या कहती हो ?

मैं क्या कहती- यार, तुम्हारी शादी मेरी कज़िन से होने वाली है, ऐसे तुम मुझे सेक्स की ऑफर दे रहे हो, कल को हमारी रिश्तेदारी खरब हो सकती है, तुम समझो, मैं तुम्हें समझाने आई थी मगर तुमने मुझे धर्म संकट में डाल दिया ।

उसने मेरे हाथ से गिलास पकड़ कर टेबल पर रखा और बोला- कोई धर्म संकट नहीं है, कोई धर्म संकट नहीं है, बस सिर्फ हमारी तुम्हारी आपसी सहमति है । दोनों एक दूसरे से प्यार करेंगे और बस सब यहीं खत्म । किसी को क्या पता चलेगा, कौन बताएगा, न मैं न तुम ।

मैं कुछ कहती, इससे पहले ही उसने मेरा चेहरा अपनी तरफ घुमाया और मेरे गाल पर हल्का सा किस करके बोला- ओ प्रीति, यू आर सो स्वीट !

और फिर उसने मेरे दूसरे गाल पर किस किया ।

मैंने अपने आप को उसके सुपुर्द कर दिया, मन ही मन में मैं खुश थी कि ले पूजा, तेरा पति तेरा होने से पहले मेरा हो गया। अब अपनी गांड में ले ले अपनी शादी और अपनी सुहागरात।

मेरी तरफ से कोई विरोध न देख कर वैभव ने मेरी टुड्डी को पकड़ कर ऊपर को किया और मेरे होंठों पर अपने होंठ रख दिये। मैंने भी उसकी गर्दन के पीछे अपना हाथ रखा और किस में उसको सहयोग दिया, उसने मेरा ऊपर वाला होंठ अपने होंठों में लिया तो मैंने भी उसका नीचे वाला होंठ अपने होंठों में ले लिया, बहुत ही मस्त और रोमांटिक चुंबन था।

करीब 10 सेकंड के लिए हम दोनों के होंठ जुड़े रहे, जब हम अलग हुये तो शर्म से मेरे गाल लाल हो गए, और दिल तेज़ तेज़ धड़कने लगा। मुझे एक बार तो लगा- हे भगवान, ये मैंने क्या कर दिया। मगर अब सोचने या पीछे जाने का वक़्त नहीं था।

तभी वैभव ने मुझे फिर से पकड़ा और इस बार बड़े अधिकार से जैसे मैं उसकी ही माशूक या पत्नी होऊँ, मुझे अपनी आगोश में लेकर वैभव ने मेरे दोनों होंठ अपने होंठों में ले लिए और लगा चूसने। मेरी तरफ से पूर्ण समर्पण था, मैंने तो अपने बदन को ढीला छोड़ दिया था कि ले भाई, जो करना है कर ले।

मेरी मूक सहमति का आभास होते ही वैभव ने अपने एक हाथ से मेरा बूब पकड़ा और धीरे धीरे दबाने लगा। मैंने उसके हाथ पर अपना हाथ रखा और ज़ोर से दबाया। यह उसको इशारा था कि क्या बच्चों की तरह हल्के हल्के दबा रहा है, मर्द की तरह दबा ज़ोर से!

बस फिर क्या था, उसने तो जैसे मेरे मम्मे को पकड़ कर निचोड़ ही दिया। फिर मेरे होंठ छोड़े, उठा और मुझे अपनी बांहों में उठा लिया, मैंने भी मुस्कुरा कर अपनी बाहें उसके गले में डाल दी।

वो मुझे बेड पे ले गया और बड़े आराम से फूलों की तरह बेड पे रखा। फिर वो मेरे पाँव के पास बैठ गया, मेरे पाँव को अपने हाथ में पकड़ा और मेरे पाँव से एक सेंडिल निकाला, फिर मेरे पैर को चूमा, पाँव के अंगूठे को भी चूमा।  
पाँव के अंगूठे से मेरे गालों तक मुझे सनसनी हुई।

फिर उसने दूसरा सेंडिल उतारा, वहाँ भी पाँव और अंगूठे को चूमा, फिर उठ कर पास आया, मेरे सीने से मेरा आँचल हटाया। सुर्ख लाल ब्लाउज़ में लिपटे गोरे बदन को देख कर बोला- अरे वाह... क्या कयामत को सुर्खी में कैद कर रखा है।  
मैंने कहा- तो कर दो आज्ञाद।

उसने ब्लाउज़ के ऊपर से मेरे दोनों मम्मे पकड़े और हल्के से दबा कर ऊपर को उठाए, एक बड़ा सा क्लीवेज बना तो उसने मेरे क्लीवेज को चूमा- यही वो चीज़ है, जो किसी भी मर्द का ईमान डुला सकती है। क्या शानदार क्लीवेज है।  
और वो मेरे क्लीवेज को चाट गया और मेरे एक बूब पर काट खाया।  
'उफ़फ़...' मेरे मुँह से निकला।

वो बोला- अपने इस उफ़फ़ को संभाल कर रखो, अभी ऐसे बहुत से उफ़फ़ आह बाहर आने हैं।

मैंने कहा- तो क्या मैं समझूँ कि मेरी ये शाम बहुत रंगीन होने वाली है ?

वो बोला- बिल्कुल, रंगीन, मस्त, ज़बरदस्त, दर्दनाक और सब कुछ।

और उसने मेरे ब्लाउज़ के सभी हुक खोले और मेरा ब्लाउज़ उतार दिया। मैं सिर्फ़ ब्रा में अपने होने वाले जीजा के सामने बैठी थी। उसने ब्रा में ही मेरे दोनों मम्मे अपने हाथों में पकड़े और जैसे उनका वज़न अपने हाथों से तोल रहा हो- बहुत ही जानदार बूब्स हैं साली तेरे तो !

मैंने कहा- मेरा सब कुछ जानदार ज़बरदस्त है।

वो हंस पड़ा और उठ कर अपने कपड़े उतारने लगा, एक एक करके उसने अपने सारे कपड़े उतार दिये, मैंने भी अपनी ब्रा उतार दी, साड़ी खोल दी मगर अपना पेटीकोट नहीं खोला।

उसने तो अपनी चड्डी भी उतार दी, बिल्कुल नंगा... गहरे भूरे रंग का उसका 6 इंच का लंड पूरा तना हुआ था।

मैंने उसके लंड को देखा तो उसने पूछा- कैसा है ?

मैंने भी हंस कर कह दिया- देखने में तो मस्त लगता है।

वो आ कर मेरे ऊपर लेट गया और मेरे एक मम्मे को अपने मुँह में लेकर चूसने लगा, मेरे मुँह से भी सिसकारी निकल पड़ी। मैंने उसके सर को सहलाया और अपने दूसरे को मम्मे को उसकी ओर बढ़ाया और वैभव ने उसे भी चूसा खूब ज़ोर लगा के, जैसे वो चाहता हो मेरे मम्मे से दूध की धार निकले और वो पिये।

मैंने भी अपनी मर्ज़ी से अपने दोनों मम्मे उससे चुसवाए।

वो अपना तना हुआ लंड मेरी जांघ पर घिसाते हुये एक हाथ से मेरा मेरा पेटीकोट उठा रहा था, उसने मेरा पेटीकोट मेरे पेट तक उठा दिया।

नीचे मेरी चिकनी जांघों पर हाथ फेरता हुया बोला- बहुत चिकनी जांघें हैं तेरी !

मैंने कहा- हाँ, आज ही वैक्स करवाई हैं।

वो बोला- तो पहले से ही तैयारी करके आई थी।

मैं हंस दी।

वो बोला- जानती हो प्रीति, जब मैंने तुझे पहली बार देखा था, तो एक बार दिल में ये खयाल ज़रूर आया था कि मेरी शादी इस लड़की से क्यों नहीं हो रही, पर पूजा भी तुम्हारी तरह बहुत खूबसूरत है। फिर मैंने सोचा, चलो साली, शादी नहीं हो पाई तो क्या, साली आधी घर वाली, और कुछ नहीं तो बदन पर हाथ तो फेर ही लूँगा, और अगर बात बन गई,

तो चोद भी दूँगा, मगर मैंने ये नहीं सोचा था कि शादी से पहले ही तुम मिल जाओगी।

मैंने कहा- अच्छा, तो तुम्हारी गंदी नज़र मुझ पर पहले से ही थी।

वो बोला- गंदी चंगी तुम जानो, पर नजर थी बस... और देखो तुम आज मेरी हो!

कह कर उसने मेरे होंठों पर फिर से अपने होंठ रख दिये और अपना हाथ मेरी चड्डी में डाल कर मेरी चूत के दाने को सहलाने लगा।

मैंने भी उसका लंड अपने हाथ में पकड़ लिया और हिलाने लगी।

वो बोला- हाथ से नहीं, इसे अपने मुँह में लेकर चूसो!

मैंने कहा- तो तुम भी चूसो।

वो बोला- क्यों नहीं।

उसने मुझे खड़ा किया, मेरे पेटिकोट की हुक खोली और पेटिकोट नीचे गिर गया, फिर मेरी चड्डी अपने हाथों से उतारी।

नंगी होकर मैं फिर से बेड पे लेट गई, तो वो मेरे पाँव की तरफ मुँह करके लेट गया। मैंने उसका लंड अपने हाथ में पकड़ा तो उसने मेरी दोनों टांगें खोल कर अपना मुँह मेरे चूत से लगा दिया। अब जब वो चूत चाट रहा था, तो मैं क्यों पीछे रहती, मैंने भी उसके लंड को चूमा और अपने मुँह में ले लिया, और जब चूसा तो उसका लंड की चमड़ी पीछे हटी और उसका गुलाबी टोपा मेरे मुँह में खुल गया। लाजवाब लंड का नमकीन स्वाद मेरे मुँह में घुल गया।

मैं चूसते चूसते उसका और ज्यादा लंड अपने मुँह में लेने लगी, तो वैभव भी अपनी ज्यादा से ज्यादा जीभ मेरी चूत में घुमाने लगा। चूत के आसपास, चूत का दाना, चूत का सुराख और फिर नीचे मेरी गांड तक वो सब कुछ चाट गया। पहली बार किसी ने मेरी गांड पर जीभ फेरी। मैंने भी उसके लंड के साथ उसके आँड तक चूस डाले। अगर मैं अपनी चूत साफ करवा के आई थी तो वो भी अपने लंड के आसपास सब बाल साफ करवा के आया

था।

फिर वैभव ने मेरी कमर को अपनी मजबूत बांहों में जकड़ा और मुझे उठा कर अपने ऊपर कर लिया। वो नीचे लेटा मेरी चूत चाट रहा था और मैं ऊपर लेटी उसका लंड चूस रही थी।

वो बोला- प्रीति, मेरे मुँह पर बैठ जा।

मैं उठ गई और अपनी चूत उसके मुँह पर ही रख दी, उसने भी अपनी जीभ फेर फेर के खूब चाटी।

मैंने कहा- वैभव मेरा होने वाला है!

वो बोला- मेरे मुँह में आ मेरी जान!

और थोड़ा सा उसे और चाटा तो मेरा तो पानी छुट गया। मैं उसके मुँह पर बैठी, अपनी चूत उसके मुँह पर रगड़ रही थी, और वो तो जैसे मेरी चूत को खा रहा था। बहुत मज़ा आया, क्या चाटता है।

मैंने पूछा- शादी के बाद पूजा की भी ऐसे ही चाटेगा?

वो बोला- क्यों नहीं, मुझे चूत चाटना बहुत अच्छा लगता है।

मैं उसके मुँह से उठी और बेड पे लेट गई। उसने मुझे संतुष्ट कर दिया था, अब मेरी बारी थी उसे खुश करने की।

मेरे बेड पे लेटते ही वो मेरे ऊपर आ गया, मैंने अपनी टांगें खोल कर उसको आमंत्रण दिया, वो मेरी टांगों के बीच में आया, उसका लंड बिल्कुल सीधा तना हुआ था। मैंने उसका लंड अपने हाथ में पकड़ा और अपनी चूत पे रखा।

उसने पूछा- डालूँ?

मैंने कहा- डालो पतिदेव।

उसने धक्का लगा कर अपने लंड का अगला भाग मेरी चूत में घुसाया। जब टोपा अंदर घुस गया, तो उसने पूछा- बड़े आराम से ले लिया। पहले भी लिया है क्या? मैंने सोचा कि यह सबसे अच्छा मौका है पूजा की माँ चोदने का, मैंने कहा- हाँ, दो चार बार!

जैसा कि मुझे उम्मीद थी, वैभव ने तभी पूछ लिया- और पूजा ने? मैंने कहा- हाँ, पूजा मुझसे किसी भी काम में पीछे थोड़े ही है।

मुझे लगा था कि ये सुन कर वैभव कुछ परेशान होगा, मगर वो बोला- कोई बात नहीं यार, मुझे कोई दिक्कत नहीं अगर मेरी बीवी ने शादी से पहले सेक्स किया, एक तो वो है इतनी खूबसूरत, और दूसरा अगर वो मेरे सामने भी किसी से सेक्स करती है, तो मुझे कोई दिक्कत नहीं। बल्कि मैं तो चाहता हूँ, मेरी बीवी इतनी खुली हो कि हम किसी अच्छे कपल के साथ स्वैपिंग भी करें।

मुझे बड़ा अजीब लगा क्योंकि मेरा वार खाली चला गया। अब तो बस सिर्फ मुझे चुदना था, और कुछ नहीं... जो मैं सोच कर आई थी, वो बात नहीं बनी।

धीरे से वैभव ने अपना पूरा लंड मेरी चूत में उतार दिया और धीरे धीरे से मुझे चोदने लगा। मैं भी नीचे से अपनी कमर हिला कर उसका साथ दे रही थी।

वैभव ने मेरे दोनों हाथ पकड़ कर मेरे सर से ऊपर ले जा कर पकड़ लिए। मैंने अपनी दोनों टांगें उसकी टांगों से लिपटा ली- मुझे प्यार करो वैभव, जैसे तुम शादी के बाद पूजा से करोगे, मुझे वैसे प्यार करो! मैं जानना चाहती हूँ कि तुम पूजा को कैसे चोदोगे, मुझे भी वैसे ही चोदो, और चोदो, और ज़ोर से चोदो वैभव।

वो भी बोला- चिंता मत कर मेरी जान, तेरी तो आज मैं माँ चोद कर रख दूँगा, तू देखती

जा !

और वैभव मुझे बड़े ज़ोर ज़ोर से चोदने लगा, पूरा लंड बाहर निकालता और फिर ज़ोर से अंदर डालता, धाड़ से उसका लंड मेरी चूत के अंदर चोट करता। जब उसके लंड का टोपा मेरी चूत में लगता तो मेरे मुँह से 'आह' निकलती।

वैभव बोला- आह, आह मत कर कुतिया ! उफ़फ़ उम्मह... अहह... हय... याह... ओह... आह ! सब कुछ बोल, तेरी कसी हुई चूत का आज भोंसड़ा न बना दिया तो कहना ! सच में वैभव में बहुत दम था। कड़क लंड से वो मुझे चोद नहीं पीट रहा था, मैं नीचे लेटी तड़प रही थी।

मेरे होंठ जीभ गाल सब को वो चूस गया, मैंने भी कोई कमी नहीं छोड़ी, उसके बालों भरे सीने में अपने नाखून गड़ा दिये, उसकी गर्दन और गालों को खूब चूमा। मैं सिर्फ आज नहीं बल्कि आने वाले कल के लिए भी सोच रही थी कि अगर पूजा की शादी के बाद भी कभी मौका लगा तो मैं उसके पति को उस से चुरा लूँ।

मगर वैभव मुझे ऐसे चोद रहा था, जैसे मैं आज उसे पहली और आखिरी बार मिल रही हूँ। जितना वो मुझे खा सकता था, चबा सकता था, उसने मुझे खूब चूसा, खूब निचोड़ा और फिर अपनी मर्दानगी के सफ़ेद रस से मेरी चूत को इतना भरा कि मेरी छोटी सी चूत उसकी मर्दानगी के रस को अपने अंदर समा नहीं पाई और उसका वीर्य मेरी चूत से बाहर भी टपक गया।

वो बेदम हुआ मेरे ऊपर गिरा पड़ा था।

एक घंटे पहले जो सिर्फ एक जीजा साली थे, अब दो प्रेमी बन चुके थे। एक घंटे में ही हमने सब कुछ निपटाया और उसके बाद फिर से तैयार होकर मैं अपने घर आ गई। घर आकर नहाई, और नए कपड़े पहन कर बैठ गई।



करीब 9 बजे पूजा मेरे पास आई, मुझसे उसने पूछा, तो मैंने उसे बता दिया- वैभव तो बहुत ही जिद्दी है यार, बड़ी मुश्किल से मनाया।

“चलो आखिर मान ही गया।” मेरी बातों से संतुष्ट हो कर पूजा अपने घर चली गई और फिर तय तारीख को उसकी शादी वैभव से हो गई।

अक्सर वैभव फोन पर मुझे बताता रहता कि वो कैसे पूजा को चोदता है। मैं भी उसे नए नए तरीके बताती, पर अक्सर मेरे तरीकों में कुछ कष्टदायक जरूर होते।

फिर मेरी भी शादी हो गई और आज जब पूजा अपने परिवार के साथ मेरे घर आई, तो वैसे ही पुरानी यादें ताज़ा हो गईं। पुरानी यादें ताज़ा हुईं, तो सोचा, चलो आप से अपनी यादें शेयर करूँ अपनी न्यू हिंदी सेक्स कहानी के रूप में! हो सकता है आपकी भी कोई पुरानी याद आपको महका जाए।

[pritixyz24@gmail.com](mailto:pritixyz24@gmail.com)

## Other stories you may be interested in

### मौसी बनी छह दिन की बीवी-3

मेरी मौसी की चुत चुदाई कहानी के पिछले भाग में आपने पढ़ा कि रात को सोने से पहले मैंने मौसी के कपड़े उतार दिए और नंगी मौसी की चूत चाट कर गर्म करने लगा। फिर वो मेरे लंड को मुँह [...]

[Full Story >>>](#)

### मेरी मम्मी रंडी निकली-5

दोस्तो, मेरी पिछली कहानियों को आपने इतना प्यार दिया, उसके लिए आप सभी का शुक्रिया! मेरी इस कहानी के पिछले भाग मेरी मम्मी रंडी निकली-4 में अपने देखा कि कैसे मैंने मेरी बहन शीतल और मेरी बाकी दो बहन जो [...]

[Full Story >>>](#)

### नौकरानी ने एक नया लंड दिलवाया

अन्तर्वासना के सभी पाठकों को मेरा नमस्कार. एक बार फिर मैं आपके सामने अपनी लेटेस्ट सेक्स स्टोरी एक बहुत ही हसीन आपबीती लेकर उपस्थित हूँ, आशा करती हूँ कि आप लोगों को पसंद आएगी. कहानी पसंद आयें तो मुझे मेल [...]

[Full Story >>>](#)

### मौसी बनी छह दिन की बीवी-1

अन्तर्वासना के सभी पाठकों को मेरा नमस्कार! यह कहानी मेरे और मेरी मौसी के बीच शुरू हुए चुदाई के सफ़र की है। यह मेरी पहली कहानी है अतः कोई गलती हो तो माफ़ करें। दोस्तो, मेरा नाम राहुल (बदला हुआ) [...]

[Full Story >>>](#)

### दोस्त की बहन की चुत की आग शांत की

नमस्कार दोस्तो, मेरा नाम लव है, मैं लखनऊ के पास का रहने वाला हूँ. मैं अन्तर्वासना का नियमित पाठक हूँ, तो सोचा क्यों न अपनी भी एक कहानी बताई जाए, जो मेरे जीवन में घटित हुई है. यह चुदाई की [...]

[Full Story >>>](#)

